मासिक सफाई, वार्षिक सफाई एवं आकस्मिक सफाई को अपनाना होगा। स्वच्छता की शुरूआत स्वयं से करना होगा जब हमारा समाज बिमारी एवं गंदगी से दूर रहेगा तभी प्रगति के पथ पर अग्रसर होगा।

****

संन्दर्भ सूची:-

1.नागला, बी**0**के**0** **(2023)** श्स्वच्छता का समाजशास्त्रश् रावत पब्लिकेशन, जयपुर पृ**0 1-15**
2.कुमार गौरव **(2015)** श्सामाजिक मानसिकता में बदलाव से ही संभव है स्वच्छ भारतश् योजना **2015** पृ**0-61**
3.पिल्लई के**0** विजयन एवं पारेख रूपल **2015**श्भारत में स्वच्छता एवं सामाजिक परिवर्तनश् योजना पृ**0-9-15**
4.सिंह आशुतोष कुमार **(2015)** श्स्वच्छ भारत से ही साकार होगा स्वस्थ भारतश् योजना अंक **1** पृ**0-37**
5.गिरी, राजीव रंजन **(2016)** श्ग्रामीण स्वच्छता एवं गॉधी जीश् कुरूक्षेत्र, अक्टूबर अंक-**12** पृ**0 41-44**
6.तोमर, नरेन्द्र सिंह **(2016)** श्स्वच्छ भारत मिशनः व्यवहार परिवर्तन से समाजिक परिवर्तन तकश् कुरूक्षेत्र अंक-**12** पृ**0-67**
7. दास डी**0** के**0** लाल **(2023)** श्समाजिक शोध सिद्धांत एवं व्यवहारश् रावत पब्लिकेशन, जयपुर पृ**0 23-40**
8.www.deoria.nic.in

युग प्रवर्तक कवि हरिवंशराय बच्चन

डॉ.पुष्पा गोविंदराव गायकवाड
वै. धुंडा महाराज देगलूरकर
महाविद्यालय, देगलूर

तू न थकेगा कभी
तू न रूकेगा कभी
कर शपथ - कर शपथ
अग्निपथ अग्निपथ अग्निपथ

हालावाद के प्रवर्तक हरिवंशराय बच्चन का जन्म उ.प्र.के इलाहाबाद शहर के मोहल्ला चाक में कायस्त परिवार में 27 नवम्बर 1907 मे हुआ। और मृत्यू 18 जनवरी 2003 को मुंबई में हुई। हिन्दी साहित्य को हालावादी विचार धारा से अमर बनाने का श्रेय कविवर बच्चन को ही, दिया जाता है। अपनी सरल और सरस कविता के द्वारा जन-मन को मुग्ध कर एक युग प्रवर्तक कवि होने का परिचय दिया है।मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा निमंत्रण, एकात संगीत, मिलन, यामिनी, प्रणय पत्रिका, बंगाल का अकाल, आरती और अंगारे, बुध्द और नाचघर, दो चट्टाने आदि आपकी प्रमुख रचनाएँ है।इनकी कविता में तीन मोड दिखाई देते है। मधुशाला और मधुकलश में हालावादी दृष्टि दिखाई देती है। हाला प्याला और मदिरालय के माध्यम से कवि जीवन की क्षण भुगंरता की सुंदर व्याख्या की है। पहली पत्नी श्याम की मृत्यू के बाद अवसाद के क्षणो में उन्होंने निशा - निमंत्रण, एकांत संगीत और आकुल अंतर की रचना की जिसे उनके काव्य जीवन का दूसरा मोड कहा जाता है। सतरंगिनी मिलन - यामिनी और प्रणय पत्रिका, तीसरे मोड को सूचित करती है।

कवि बच्चन जी ने हाला, प्याला सुराही, मदिरालय आदि द्वारा उन्होंने मनुष्य गतिशीलता, संघर्ष शीलता क्षण भंगुरता सहज प्रतिकात्मकता, उल्लास जवानी की मस्ती तथा पराजय की भावना से मुक्ति का संदेश दिया है। साथ ही उनकी कविताएँ जीवन के प्रति विश्वास कर्तव्यता समाज की अभाव ग्रस्तता वैयक्तिक आदि को भी प्रस्तुत करती है। बच्चन जी की कविताएँ व्यक्ति को जातीयता वर्णवाद एंव साम्प्रदायिक आदि से ऊपर उठकर जीने की नयी प्रेरणा देती है। मधुशाला यह उनकी ऐसी कविता है। जहा परसब लोग आपसी बैर भुलाकर एक साथ घुल मिलकर रहने का संदेश देती है। इनकी मधुशाला में काई जाति भेद या वर्णभेद नही होता, वह सबका स्वागत करती है। और जो लोग मंदिर मस्जिद के नाम पर लडते है। मधुशाला उनका मेल कराती है उनमें समता समानता का मूल मंत्र देती है। जैसे

धर्म ग्रंथ सब जला चुकी है, जिसके अन्दर की ज्वाला
मन्दिर मस्जिद गिरजे
सब को तोड चुका जो मतवाला
पण्डित मोमिन पादरियों के फन्दो को
जो काट चुका
कर सकती है आज उसी का स्वागत
मेरी मधुशाला

मधुशाला पंडित मोमिन पादरियो के विवादो को तोड कर हम सब एक है का बुँलंद नारा देती है। इस मधुशाला में उच नीचता का भेदभाव नही। इस मधुशाला में सभी जाति धर्म के लोग आ सकते है। और जीवन का आनंद लुटा सकते है।निर्माण कविता में निराशा के बाद आशा का आगमन होता है। अंधेरे के बाद प्रकाश का सत्य उद्घाटित होता है। निर्माण कविता में आशा उत्साह आगे बढने की प्रेरणा मिलती है।कवि बच्चनजीने कहा है नाश और निर्माण जीवन के

दो सत्य है। निराशा के बाद आशा और अंधेरे के बाद प्रकाश यही जीवन का सत्य है। जीवन सतत विकसनशील होता है। मनुष्य जीवन में निर्माण का क्रम लगातार चलता रहता है। निर्माण की यह प्रक्रिया कभी रूकनी नही चाहिए की, वह विनाश से न घबराते हुए लगातार निर्माण की प्रतिक्रया में आगे बढे।अपनी पहली पत्नी श्याम की मृत्यू के बाद बच्चन जीवन में पुर्ण निराश हो चुके थे। परंतू एकदिन उन्होंने अनुभव किया की चिडियाँ अपना घोसला बार-बार नष्ट होने पर भी निराश नही होती अपना घोसला फिर से बनाती है। उसी प्रेरणा से कवि ने यह कविता लिखी है। प्रकृति से अनेक उदाहरण देकर बच्चन यह प्रमाणित करते है। जीवन में निराशा के प्रसंग आने पर भी मनुष्य को उदास नही होना चाहिए। उसे रूकना नही चाहिए। बल्कि और अधिक गति के साथ निर्माण की दिशा में उसे अग्रसर होना चाहिए। यही जीवन का सत्य है। और इसी में मानव जीवन का उज्वल भविष्य निहित होता है।निर्माण में ही मानव जीवन का उज्वल भविष्य निहित है। अंधेरे के बाद प्रकाश यह जीवन का क्रम है। च्याहे आँधी आये या तुफान इस भयावह संकट में मानव को भयभीत नही होना चाहिए। मुसिबतो का पहाड केवल मनुष्य पर नही टूटता है बल्कि पंछीयो पर भी संकट के बादल मंडराते - पर छोटा सा जीव डरता नही है। निर्माण कविता की यह पक्तियाँ हम सभी के लिए प्रेरणादायी सिध्द होती है, जैसे:-

घोर गर्जनमय गगन के
कंठ में खग पंक्ति गाती
एक चिडिया चोंच में तिनका
लिए जो जा रही है
वह सहज में ही पवन
उंचास को नीचा दिखाती
नाश के दुख से कभी
दवता नही निर्माण का सुख

छोटी सी चिडियां गगन के गर्जन से कभी विचलित नही होती चिडिया चोंच में तिनका लिए हुए मानो वह पवन को नीचा दिखा रही है। तुम कितना भी मुझे डरावो या मेरे घोंसले को तोड डाले मुझे कोई पर्वा नही। प्रकृति हमें जीना भी शिखाती है और मृत्यू का तांडव भी दिखाती है। कवि ने चिडिया का उदाहरण देकर हमे मनुष्य को नव निर्माण की ओर चलने की प्रेरणा दी है।

नाश के दुख से कभी
दवता नही निर्माण का सुख

नाश के दुख से कभी दवता नही निर्माण का सुख यह मनुष्य जीवन के लिए बहुत ही महत्वपुर्ण घटना है। हारे हुऐ इन्सान को फिर से लढने की शक्ति देती है। यह निर्माण कि पंक्तियाँ। हरिवंशराय बच्चन इस कविता के द्वारा जीवन की कठिनाइयो से लडने और सब कुछ नष्ट हो जाने पर फिर से जीने की प्रेरणा दी है। पक्षी अपने नष्ट हुए घोंसले का फिर से निर्माण कर और अपने मीठे स्वर से इस संसार में फिर से प्रेम और स्नेह भर देता है। उसी तरह हमे भी सदा खुश रहना चाहिए।जैसे

वह चले झोके कि काँपे
भीम कायावान भूधर
जड समेत उखड पूखकर
गिर पडे टूटे विटप पर
हाय, तिन को के विनिर्मित
घोसलो पर क्या न बीती

प्रकृति की चपेट में सभी जीव भयभीत होते है। भयंकर आँधी के कारण बडे बडे पर्वत भी हिल उठते है। तिनके से बने घोंसले कैसे बच सकते थे ?कवि आशा रूपी पंछी का संचार हमारे सूने जीवन में भर देते है। इतना विनाश होने पर भी आशा रूपी पंछी बैढा था। यह पंछी आकाश में ऊँचा चढकर गर्व से अपनी छाती खोले उड रहा था। नए सिरे से फिरसे घोंसले के निर्माण में व्यस्त होकर स्नेह और प्रेम का निमंत्रण देकर सृजन में लगा था। सृजनशील बने रहने की हमे सीख मिलती है।जो बीत गई सो बात गई प्रस्तुत कविता में कविने बीती हुई बातों को भूलाकर भविष्य में सुख से जीने का संदेश दिया है। जीवन में अनेक बार ऐसे प्रसंग आते है जब लगता है कि सब कुछ समाप्त हो गया है लेकिन यह सच नही है। जीवन में दुख को सहलाने के बजाय उसे भूलाकर जीवन आनंद और स्वाद से जीना ही सार्थकता है।आकाश में तारे टूटते है लेकिन आकाश कभी शोक नही मनाता। मधुवन में कलियाँ मुरझाती है लेकिन वह कभी शोक नही मनाता मदिरालय में प्याले टूटते है लेकिन मदिरालय कभी नही पछताता। जीवन में भी अनेक चींजे बिछडती है टूटती हैं। तब व्यक्ति को निराश होकर नही बैठना चाहिए। बच्चनजी की कविताओं में जीवन है उत्साह है उम्मीद है आत्मबल है जैसे :-

जीवन में एक सितारा था
माना वह बेहद प्यारा था
वह डूब गया तो डूब गया
अंबर के आंगन को देखो
कितने इसके तारे टूटे

बच्चनजी की कविताये घोर निराशा के क्षणो में भी एक उम्मीद है। रोशनी की किरण है। जो हमे रास्ता दिखाती है। जीवन में कई सारे ऐसे मोड आते है। जो हमें एक दूसरे से अलग कर देते है। फिर भी हमे बीती हुई बातो को भूलाकर आगे बढना चाहिए।कविता के दूसरे खंड में कवि ने कुसूम के माध्यम से जीवन के रहस्य को समझाने का प्रयास किया है।जैसे:-

सुखी कितनी इसकी कलियाँ
मुर्झाई कितनी वल्लरियाँ
जो मुर्झाई फिर कहाँ खिली
पर बोलो सूखे फूलों पर
कब मधुबन शोर मचाता है।

बच्चनजी कहते है कि मधुबन फुलों के बगीचे में कितनी कलिया सुख गई कितनी लताएं वल्लरिया मुरझा गई। परंतू जो सुख गई या मुरझा गई वे कभी खिलती नही पर मधुबन उन मुरझाए फुलों पर कभी शोर नही मचाते। बीते हुए समय को स्मरण करके अपना वर्तमान बिगाड लेना व्यर्थ है। यह अनमोल संदेश कवि का युवाओ के लिए बहुत ही महत्वपुर्ण लगता है। कवि फिर से जीवन को सुन्दर बनाने की प्रेरणा देते है।

कितने प्याले हिल जाते है
गिर मिट्टी में मिल जाते है
जो गिरते है कब उठते है
पर बोलो टूटे प्यालों पर
कब मदिरालय पछताता है.

कवि ने मदिरालय की घटना को भी यहाँ प्रस्तुत किया है। मदिरालय में प्याले टूटते है। लेकिन मदिरालय कभी नही पछताता जिन्हे टूटना था वे टूटेंगे ही पीनेवाले प्याले टूटने पर शोक नही मनाते वे पुरी ममता के साथ फिर पीते है। कवि ने जीवन की क्षणभंगूरता की घटना को उपस्थित कर हमे जीवन में आगे बढने की नई सीख दी है। जैसे:-

मृदु मिट्टी के है बने हुए
मधु घट फुटा ही करते है
लघु जीवन लेकर आए है
प्याले टूटा ही करते है.

मनुष्य जीवन में भी अनेक चीजे मिलती है। बिछडती है टूटती है तब व्यक्ति को निराश नही होना चाहिए। जो बीत गई सो बात गयी कहकर फिर से आगे बढना चाहिए। कवि पूरे विश्व की पीडा को कुछ इस तरह प्रस्तुत करते है।

कोई मस्जिद ना होती, कोई मन्दिर न होता।
कोई दलित ना होता, कोई काफिर न होता।
कोई बेबस ना होता, कोई बेघर ना होता।
किसी के दर्द से कोई बेखबर ना होता।

इस काव्य में कवि ने पूरे समाज व्यवस्था की पीडा को प्रस्तुत किया है। कोई दलित न होता। कोई काफिर न होता। कोई अनाज के लिए बेबस न होता। कोई बेघर नही होता। किसी के दर्द से हम बेखबर न होते।

बच्चन के अनमोल विचार यहा प्रस्तुत करना बेहद आवश्यक लगता है। जैसे:-

कभी फूलो की तरह मत जीना
जीस दिन खिलोगे बिखर जाओंगे
जिना है तो पत्थर बनकर जिओ
किसी दिन तराशे गए तो
खुदा बन जाओगे।

निष्कर्ष:-हरिवंशराय बच्चनजी की कविताएँ मन का उत्साह बढाती है। हमे धर्म मजहब के फेर में न पडते हुये इन्सान बने रहने की सिख मिलती है। जैसे: -

तू भी इन्सान होता
मैं भी इन्सान होता
काश कोई धर्म न होता
काश कोई मजहब ना होता

आज भी हमारे देश में धर्म मजहब के नाम पर हम आपस में लढते रहते है। सबसे पहले हम, इन्सान बने तो आपसी मतभेद नही रहेंगे। और विदेशीयों को आक्रमण करने का कोई भी अवसर नही मिलेगा। इतिहास गवाह है इस बात का। हमारी आपसी मतभेद के कारण ही विदेशी हम पर अधिकार जताने लिगे यदि हम धर्म मजहब से परे जाकर इन्सान बने तो आज भारत का मानचित्र कुछ और होता। यह अनमोल संदेश बहुत ही प्रेरणादायी है।समाज को सही दिशा देनेवाली उसे जागरूक करनेवाली और खासकर युवाओं को असफलता से हार मान सफलता के लिए सदैव प्रयत्नशील रहने व विपरीत परिस्थिति में भी पूरे मनोयोग से संघर्ष करनेवाली ये कविता हमारे लिए नई आशा का निर्माण है।

****

संदर्भ ग्रंथ:-

1.समृध्द काव्य - डॉ. संजय गडुपायले
2.आर्वाचिन हिन्दी काव्य - डॉ नरसिंह प्रसाद दूबे
3.स्वतंत्र वार्ता-
4.आधुनिक हिन्दी साहत्य- डॉ. अमर प्रसाद जायस्वाल

महादेवी वर्मा की गद्य रचना एवं स्त्री

प्रियंका सिंह
शोध छात्रा
हिन्दी विभाग काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी-221005 मो.नं. 9795901499

महादेवी वर्मा हिन्दी साहित्य की सर्वाधिक प्रतिभावान कवयित्री एवं लेखिका रही है। छायावादी युग की प्रमुख स्त्री विमर्श की रचनाकार हैं। इन्होंने पद्य एवं गद्य दोनों विधाओं में अपने विचार प्रकट किये है। यहाँ उनकी स्त्री विमर्श पर आधारित गद्य रचनाओं पर बात करेंगे जिनमें प्रमुख हैं- ''श्रृंखला की कड़ियाँ'' ''स्मृति की रेखायें'' ''अतीत के चलचित्र''। महादेवी अन्याय को सहन करने वाली महिलाओं में नहीं थी। लेकिन ध्वंस के लिए ध्वंस के सिद्धान्त में उनका विश्वास नहीं था। बदले की भावना से स्त्री-मुक्ति सम्भव नहीं है। वह तो सृजन के उन प्रकाश तत्वों के प्रति निष्ठावान है जिनकी उपस्थिति में विकृति अंधकार के समान विलीन हो जाती है।

महादेवी वर्मा के स्त्री-विमर्श पर कलम चलने के पश्चात् हिन्दी साहित्य में स्त्री-विमर्श एक आन्दोलन का रूप ले लिया। महादेवी वर्मा भारतीय स्त्रियों में दम भरते हुये कहती हैं- ''जिस दिन भारतीय नारी अपने सम्पूर्ण प्राण प्रवेग से जाग सके उस दिन उसकी गति रोकना किसी के लिए सम्भव नहीं। उनका विश्वास है कि स्त्रियों के अधिकार भिक्षावृत्ति से न मिले हैं न मिलेंगेए क्योंकि उनकी स्थिति आदान-प्रदान योग्य वस्तुओं से भिन्न हैं। किसी भी समाज में व्यक्ति का सहयोग और विकास की दिशा में उसका उपयोग ही उसके अधिकार निश्चित करता है।''[1]

महादेवी वर्मा के रचनाओं में जहां एक ओर रहस्यवादी चेतना दिखाई देता है वहीं दूसरी तरफ आक्रोश और संघर्ष के भी दर्शन होते हैं। स्त्री को अपना महत्व स्थापित करना ही होगा। इसके लिए स्त्री को कितना भी संघर्ष करना पड़े। इस संसार में वही व्यक्ति सम्मान व अपना स्थान प्राप्त कर सकता है जिसके हृदय और मस्तिष्क ने सम्पूर्ण विकास पाया है। अपने व्यक्तित्व द्वारा मनुष्य समाज से रागात्मक से अतिरिक्त बौद्धिक सम्बन्ध भी स्थापित कर सकने में समर्थ हो। इसके अभाव में व्यक्ति अपने संकल्प व इच्छाशक्ति को अपना नहीं समझ सकता और न्याय-अन्याय का अन्तर स्पष्ट नहीं कर सकता। समाज में गतिशीलता विकास तथा सामंजस्य के लिए स्त्री हो या पुरूष दोनों की लिए आवश्यकता है। अगर हम विकास के दो महत्त्वपूर्ण अंगों में से एक को नजर अन्दाज करते हैं तो यह हमारे सम्पूर्ण समाज के लिए घातक सिद्ध होगा।

सामाजिक अधिकारों के लिए भी यही सत्य है। जो बन्धन पुरुषों की स्वेच्छाचारिता के लिए इतने शिथिल होते हैं कि उन्हें बन्धन का अनुभव ही नहीं होता वे ही बन्धन स्त्रियों को परावलम्बिनी दासता में इस प्रकार कस देते हैं कि उनकी सारी जीवनी शक्ति शुष्क और जीवन नीरस हो जाती है। समस्त सामाजिक नियम मनुष्य की नैतिक उन्नति तथा उसके सर्वतोन्मुखी विकास के लिए आविष्कृत किये गये हैं। जब वे ही मनुष्य के विकास में बाधा डालने लगते हैं तब उनकी उपयोगिता ही नहीं रह जाती।''[2]

अर्थात् समाज के वे नियमए बन्धन जो एक पुरुष के लिए बिल्कुल उनके इच्छानुसार हो जाता है वे उस बन्धन में जकड़े से नहीं होते हैं जैसे एक स्त्री बंधी होती है। उन्हें बन्धनों का अनुभव ही नहीं होता और न ही इस पर कोई खास मुद्दा बनता है। लेकिन ये ही सामाजिक बन्धन एक स्त्री को इस प्रकार कस देता है कि वे अपने उत्साह व जीवतंता को